पाठ 13

भारत की मनस्विनी महिलाएँ

(बाबा का पत्र पोती के नाम)

लाल कुटीर,
आरा
दिनांक : 10.07.92

मेरी प्यारी किरण!
सस्नेह शुभाशीर्वाद।

तुम्हारा 05.07.92 को पत्र प्राप्त हुआ। यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि पिछली परीक्षा में तुम्हें अच्छे अंक प्राप्त हुए हैं। और अब तुम सातवीं कक्षा में पहुँच गई हो। तुमने यह भी लिखा है कि तुम्हारी बहन रोमा और अनुज शंकर क्रमशः तीसरी और दूसरी कक्षा में आ गए। मुझे यह जानकर और भी अधिक खुशी हुई कि मेरी पोती रोमा को अपनी कक्षा में प्रथम स्थान मिला है। इस सफलता के लिए तुम सभी बच्चे–बच्चियों को बाबा की ओर से स्नेह सनी बधाई!

अब तुम्हारे पत्र का उत्तर! तुम भारत की मनस्विनी महिलाओं के विषय में कुछ जानना चाहती हो। तुम्हारी इस जिज्ञासा में अपनी पूर्वजा भारतीय महिलाओं के प्रति तुम्हारी श्रद्धा झलकती है। यह एक बड़ा ही शुभ लक्षण है। मनुष्य जैसा सोचता है, वैसा ही बनता है, तुम मनस्विनी महिलाओं के बारे में जानोगी, तो उनके सद्गुण अनायास तुम्हारे मन में आ जाएँगे। तुम्हारे जीवन में उनके क्रमशः समावेश से तुम्हारे उज्ज्वल भविष्य का पथ स्वतः प्रशस्त हो उठेगा।

भारतीय नारियाँ अनादि काल से ही अपनी विद्या, बुद्धि, कला–कुशलता, कर्मठता तथा सहिष्णुता के आधार पर मानव जीवन और जगत को अधिकाधिक सुखमय बनाने का सफल प्रयास करती हैं। साथ ही अपने त्याग, तपस्या, शौर्य, उदारता, भक्ति, वात्सल्य, जन्मभूमि प्रेम तथा अध्यात्म चिंतन से सुधी समाज के सम्मुख उच्चादर्श भी प्रस्तुत करती आ रही हैं। इनके कीर्ति कलाप से आज भी समस्त भारतीय वाङ्मय सुरभित है। हमारे पूर्वजों ने नारी को सदा पूजनीया माना है। **'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः''** कहकर उन्होंने नारी–जाति का श्रद्धापूर्वक सम्मान किया है। आज भी किसी अनजान वयस्क महिला को माताजी कहकर संबोधित करने की परंपरा विद्यमान है। यह भारतीय चिंतन और आचरण की एक सात्विक अभिव्यक्ति है।

नारी जाति के प्रति पुरुष वर्ग का यह श्रद्धा–सम्मान भरा आचरण अकारण नहीं, प्रत्युत सकारण है। नारी ने ही पुरुष को गृहस्थ और किसान बनाया। उसका यह प्रयत्न मानव सभ्यता तथा संस्कृति के भवन की नींव की पहली शिला प्रमाणित हुआ। स्वयं गार्हस्थ्य जीवन के केंद्र में स्थिर–स्थित रहकर भारतीय नारी ने बड़े–बूढ़ों की सेवा की, नन्हें–मुन्नों को पाला–पोसा और पति के कंधे से कंधा मिला कर पारिवारिक दायित्व का स्निग्ध निर्वहन किया। एक विस्तृत उद्यान में खिले सैकड़ों रूप रंग गंधों के हज़ार–हज़ार सुमनों की भाँति भारत की सन्नारियों ने भारतीय सभ्यता और संस्कृति में विपुल वैविध्य का विधान किया है उनके प्रत्येक पक्ष को समृद्ध किया है। यह भारतीय पुरुष वर्ग का केवल आभार–स्वीकार है कि उसने शक्ति, सम्पत्ति और समृद्धि को अधिष्ठात्री देवियों के रूप में काली, लक्ष्मी और सरस्वती की प्रतिष्ठा कर रखी है और उनका पूजन–आराधना कर वह आज भी धन्य हो रहा है।

किरण, तुमने भारतीय नारियों के बारे में पूछकर मुझे फेर में डाल दिया है। स्मृति के चित्रपट पर सैकड़ों–हज़ारों जाज्वल्यमान नक्षत्रों की भाँति चमकते–दमकते नारी बिंब एक के बाद एक ऐसे उभरते–उमड़ते आ रहे हैं कि कलम उलझन में पड़ गई है। किसका वर्णन हो और किसका नहीं? सभी तो एक–से–एक बढ़कर हैं। ''को बड़–छोट कहत अपराधू'' की स्थिति है। तो फिर जैसे–जैसे चित्र उभरता है, उसका अंकन करता जाता हूँ। सब तो एक जैसी गरीयसी एवं महीयसी हैं। और पत्र में बहुत अधिक लिखा भी तो नहीं जा सकता।

तुमने गौरी का नाम सुना है। वह पार्वती, जिसने हिमाचल के घर जन्म लिया और पति रूप में शिव की प्राप्ति के लिए घोर तप किया था। अब इस आख्यान को समझने की कोशिश करो। पार्वती नारी जाति का प्रतिनिधित्व करती हैं। 'शिव' समग्र जीव–जगत् के लिए कल्याण तत्व हैं, जहाँ मानव–दानव, सुर–असुर, दैत्य–गंधर्व सब एक समान आश्रय पाते हैं। वहाँ साँप, बिच्छु, बाघ–सिंह, मूषक और मयूर सब एक साथ सानंद विचरण करते हैं। 'शिव' वह तत्त्व भी है जो विषय वासना को भस्म करने की क्षमता रखता है। ऐसी कल्याणकारी शिव शक्ति को संसार के लिए सुलभ करने के निमित्त देवी पार्वती ने सफल साधना की। तुमने सुना कि सती मरण के बाद शिवजी संसार से विमुख हो गए थे। उन दिनों जीव जगत उनसे लाभान्वित नहीं हो रहा था। माँ पार्वती ने उन्हें प्राप्त कर संसार के कल्याण की दिशा में उन्हें उन्मुख कर दिया। आज समस्त समाज माँ के रूप में उनकी पूजा करता है।

सावित्री की कथा तो तुम्हें याद ही होगी। राजमहल के लाड़ प्यार में पली उस सुकुमारी ने ससुराल की मर्यादा की रक्षा के लिए किस प्रकार सहर्ष वन्य जीवन अपना लिया था। उसने अंधे सास–ससुर की सेवा के साथ–साथ अनुपम पातिव्रत्य का आदर्श संसार के सम्मुख रखा। इस त्याग, तपस्या और निष्ठा से उसमें ऐसी अलौकिक शक्ति का स्रोत उमड़ा कि वह यमराज के फंदे से मृत पति को भी जीवित लौटा लाने में समर्थ हुई।

एक थी माता अनुसूया, महर्षि अत्रि की पत्नी। उसके पातिव्रत्य और तज्जनित शक्ति के क्या कहने! परीक्षा लेने आए त्रिदेव–ब्रह्मा, विष्णु और महेश। और बन गए उस महा महिमामयी सती की गोद में किलकते–मचलते नन्हें शिशु। यह था सती का प्रताप, भारतीय नारी की लोकोत्तर शक्ति।

अपने पुत्रों को सुशिक्षा देने वाली माताओं में एक नाम आता है माता मदालसा का। देवी मदालसा ब्रह्म ज्ञान की साकार प्रतिमा थीं। वे अपने कई बच्चों को पालने में लिटा कर लोरियाँ गाते–गाते ब्रह्मवादी बना चुकी थीं। उनकी लोरी की एक कड़ी थी :–

शुद्धोऽसि, बुद्धोऽसि, निरंजनोऽसि
संसार माया पारिवर्जितोऽसि

अंत में पति के विशेष अनुरोध पर केवल एक पुत्र लोक सेवा के लिए प्रशिक्षित किया।

विद्वत्ता के क्षेत्र में गार्गी और मैत्रेयी की महिमा आज भी गाई जाती है। शास्त्रार्थ में बड़े–बड़े धुरंधर ज्ञानी ऋषि–मुनि उनका लोहा मानते थे और किसी भी विवादास्पद विषय में उनकी वाणी प्रमाण मानी जाती थी।

राजा दशरथ की रानी कैकेयी की सूझ–बूझ और वीरता तो जगजाहिर ही है। देवासुर संग्राम में राजा दशरथ के रथ की कील निकल गई थी। यदि रथ का पहिया निकल जाता, तो पता नहीं क्या हो जाता। राजा दशरथ विरथ होकर पराजित भी हो सकते थे। जानते हो, कैकयी ने क्या किया। वह राजा के साथ उसी रथ में थी, उसने कील के स्थान पर उँगली लगा दी। रथ चलता रहा, युद्ध होता रहा। विजय राजा की हुई। तब उनका ध्यान गया कैकेयी की ओर, उसकी उँगली की ओर। वे सब कुछ समझ गए। उन्होंने रानी का आजीवन आभार माना।

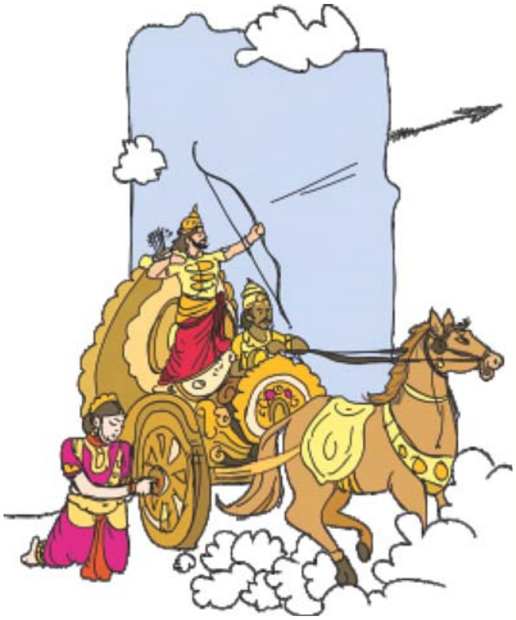

एक थी सीता। हालत यह थी कि ''पलँग पीठ तजि गोद हिंडोरा। सिय न दीन्ह पग अवनि कठोरा।'' ऐसी सुकुमारी, ऐसी कोमल परिस्थिति में पली–बढ़ी। किंतु जब पति को वन जाना पड़ा तो भूल गई अपनी सुख–सुविधा और चल पड़ी तपस्विनी वेश में पति की सेवा के लिए, सघन वन प्रांगण में, अपरिचितों के प्रदेश में, चौदह वर्षों तक जंगल में साथ दिया। रावण द्वारा अपहृत हुई। हज़ार–हज़ार संकट सहे, लाख–लाख साँसतें सहीं। फिर, जब अयोध्या आकर राम राजा बने तो सीता को वनवास दे दिया। और सीता को कोई शिकायत नहीं, कोई प्रतिवाद नहीं! जो मर्जी पति परमेश्वर की, वही हो। उसने आत्मबल का सहारा लिया। जंगल में जाकर कुटी छवाई। वहाँ पुत्रों के रूप में लव–कुश नामक दो अनमोल निधियाँ पायी। और वे पुत्र भी कैसे? अभी दूध के दाँत भी नहीं टूटे थे कि सीता के इन दो लालों ने, अश्वमेध के घोड़े के लिए लड़ते समय, राम की सेना के

महारथियों के दाँत खट्टे कर दिए। ऐसी थी सीता की शक्ति, ऐसी थी उस मनस्विनी की शिक्षा।

आधुनिक युग की वीर भारतीय महिलाओं में तुम रानी भवानी, अहल्याबाई, लक्ष्मीबाई इत्यादि के बारे में इतिहास में पढ़ोगी। इन नारियों ने भी अपने साहस, शौर्य तथा त्याग से अमरत्व प्राप्त किया है।

रामकृष्ण परमहंस की पत्नी माँ शारदामणि को भी भूला नहीं जा सकता। रामकृष्ण का विवाह बहुत कम उम्र में हो गया। उनकी पत्नी शारदामणि तो बहुत ही छोटी थी। शारदामणि ससुराल आकर घर की सेवा में लग गई। उनके पति को ग्राहस्थ्य के प्रति कोई आकर्षण नहीं था। वे एक काली मंदिर के पुजारी थे और वहीं रहकर माँ काली की पूजा करते थे। वे अत्यन्त तीव्र गति से अध्यात्म की ओर अग्रसर होने लगे। माँ शारदामणि का सफल ग्राहस्थ्य का मनोरथ भंग होने लगा। किंतु, यहीं उनका भारतीय चरित्र उजागर हुआ। एक भारतीय नारी अपने पति के सत्कार्य में सदा सहयोगिनी रही है। माँ शारदामणि पति की साधना में सहायिका बनकर उनकी सेवा में संलग्न हो गई। धीरे–धीरे उनमें भी आध्यात्मिक शक्ति का समावेश और विकास हुआ। रामकृष्ण के निर्वाण के बाद शारदामणि ने ही उस आश्रम का संचालन किया, जिसका निर्माण परमहंसदेव ने किया था। स्वामीजी ने विवेकानंद का निर्माण किया। आज विश्व के कोने–कोने में रामकृष्ण मिशन के रूप में उनकी कीर्ति व्याप्त है। उनकी इन महान उपलब्धियों में अवश्य ही माँ शारदामणि के प्रच्छन्न सहयोग की सुवास विद्यमान है।

यह रहा संक्षेप में तुम्हारी चिट्ठी का जवाब। तुमने अपनी बूढ़ी दादी (परदादी) के गिरते स्वास्थ्य की चर्चा की है। अब तो उनकी उम्र नब्बे वर्ष से अधिक हो गई है। उन पर विशेष ध्यान रखना। हम लोगों की उन्नति और दीर्घायु के लिए वे नित्य भगवान से प्रार्थना किया करती है। रोमा, शंकर और शंभू को तो तुम स्वयं प्यार करती हो। अपने पिताजी तथा माताजी से कहकर उनकी पढ़ाई–लिखाई तथा स्वास्थ्य आरोग्य का सुंदर प्रबंध कराती रहना।

मेरी पूजनीया माताजी से मेरा विनम्र प्रणाम निवेदित करना। शेष सभी परिजनों से मेरा शुभाशीर्वाद कहो! रोमा, शंकर, शंभु को प्यार और दुलार।

तुम्हारा बाबा,
सत्यनारायण
कुमारी किरण कौशिकी,
पथरीघाट, पटना–6

शब्दार्थ

अधिष्ठात्री	–	माता, देवी	सुधी	–	समझदार, बुद्धिमान
वात्सल्य	–	स्नेह (माता का संतान से प्रेम)	साँसत	–	संकट
मनस्विनी	–	उच्च विचार वाली, विदुषी	शुभ	–	कल्याणकारी
जाज्वल्यमान	–	चमकता हुआ, प्रकाशमान	सहिष्णुता	–	सहनशीलता

अभ्यास कार्य

पाठ से

उच्चारण के लिए

ब्रह्मवादी, शुभाशीर्वाद, वैविध्य, आध्यात्मिक

सोचें और बताएँ

1. किरण ने अपने पत्र में क्या पूछा था ?
2. 'मनुष्य' जैसा सोचता है, वैसा ही बनता है, कैसे ?
3. विवेकानंद जी के गुरु का नाम बताइए।

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. नारी जाति के प्रति पुरुष वर्ग ने श्रद्धा–सम्मान प्रकट किया है, क्योंकि
   (क) नारी पुरुष से अधिक बुद्धिमती होती है।
   (ख) वह रसोई का काम अधिक करती है।
   (ग) पुरुष नारी से डरता है।
   (घ) उसने भारतीय सभ्यता के विकास में विशेष योगदान दिया है।

खाली जगह भरिए

1. रामकृष्ण परमहंस की पत्नी..................................को भी भूला नहीं जा सकता।
2. पार्वती जिसने .... के घर जन्म लिया।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. यह पत्र किसने किसको लिखा है?
2. किरण दादाजी से क्या जानना चाहती थी?
3. कील के स्थान पर उँगली किसने लगाई थी?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. बाबा ने अपने पोते–पोतियों को बधाई क्यों भेजी है?
2. विद्वत्ता के क्षेत्र में किस की महिमा आज भी गाई जाती है?

3. शिव तत्त्व क्या है? पाठ के आधार पर लिखिए।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. पाठ में आई मनस्विनी महिलाओं को सूचीबद्ध कर उनका संक्षेप में परिचय दीजिए।
2. "मनुष्य जैसा सोचता है वैसा ही बनता है"। इस कथन के प्रमाण में जानकारी प्राप्त कर उदाहरण लिखिए।

भाषा की बात

1. ''तुमने गौरी का नाम सुना है। उसने हिमाचल के घर जन्म लिया था।'' दूसरे वाक्य में गौरी के स्थान पर "उसने" शब्द का प्रयोग किया गया है। **संज्ञा के स्थान पर काम आने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं**। सर्वनाम के छह भेद होते हैं–
   (क) पुरुषवाचक – मैं, हम, तुम, तू, वह, वे, यह, ये
   (ख) निश्चयवाचक – वे, वह
   (ग) अनिश्चियवाचक– कुछ, कोई
   (घ) संबंधवाचक – जो, जिसकी, जिसने, उसने
   (ङ) प्रश्नवाचक– कौन, क्या, कब, कहाँ, कैसे
   (च) निजवाचक– अपने, आप, स्वयं, खुद
2. प्रत्येक सर्वनाम का प्रयोग करते हुए दो–दो वाक्य अपने शिक्षक/शिक्षिका की सहायता से लिखिए।
3. जैसा कि आप जानते हैं कि किसी शब्द को बहुवचन में प्रयोग करने पर उसकी वर्तनी में बदलाव आता है; जैसे– एक खिड़की के लिए हम 'खिड़की' का प्रयोग करते हैं और एक से अधिक के लिए खिड़कियाँ।

   खिड़की शब्द की वर्तनी में बदलाव यह हुआ है कि अंत के वर्ण "की" की मात्रा दीर्घ (ई) से ह्रस्व (इ) हो गई है। ऐसे शब्दों को जिनके अंत में दीर्घ ईकार होता है, बहुवचन बनाने पर वह इकार हो जाता है, यदि शब्द के अंत में ह्रस्व इकार होता है तो उसमें परिवर्तन नहीं होता; जैसे– नीति–नीतियाँ।
   आप नीचे दिए शब्दों का वचन बदलकर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए–

उँगली	तैयारी
ताली	देवियों
ज़िम्मेदारियाँ	स्वाभिमानियों

पाठ से आगे

1. देवासुर संग्राम की अंतर्कथा जानिए।
2. यदि सीता के स्थान पर आप होते तो राम के वनगमन पर क्या करते? लिखिए।
3. इस पाठ में हमने प्राचीन विदुषी महिलाओं के बारे में पढ़ा है। ऐसी ही आधुनिक विदुषी महिलाओं की जानकारी प्राप्त कर लिखिए।

यह भी करें

1. आपकी जानकारी में ऐसी महिलाएँ अवश्य होंगी, जिन्होंने समाज के लिए उल्लेखनीय कार्य किया है। उनका नाम व उनके द्वारा किए गए कार्य की तालिका इस प्रकार बनाइए –

महिलाओं के नाम	किए गए कार्य

2. महिला और पुरुष का समाज के विकास में बराबर महत्त्व है। इस विषय पर बाल सभा में अपने विचार प्रकट कीजिए।

तब और अब

पुराना रूप	ब्रह्म	चञ्चल	खट्टा
मानक रूप	ब्रह्म	चंचल	खट्टा

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

A woman' s life is a history of the affections.

एक नारी की जिंदगी वत्सलता का इतिहास है।